बिहार की अर्थव्यवस्था में गन्ने का बड़ा योगदान, गन्ना उत्पादन के लिए उपयुक्त है यह क्षेत्र, बढ़ेगी किसानों की आय

गन्ना उद्योग कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़: राधामोहन

शिलान्यास

पीपराकोठी |एक संवाददाता

बिहार का विकास कृषि पर निर्भर है। बिहार की अर्थव्यवस्था में गन्ने की खेती का काफी योगदान है। गन्ना उद्योग कृषि अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन चुकी है। गुड़ प्रसंस्करण केंद्र गन्ना उद्योग को एक नया आयाम देगा।

उक्त बातें केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री राधामोहन सिंह ने सोमवार को केविके पिपराकोठी में गुड़ प्रसंस्करण सह किसान गोष्ठी केंद्र के शिलान्यास के अवसर पर कही। कहा कि इस क्षेत्र की जलवायु गन्ना उत्पादन के अनुकूल है। यहां के किसान बड़े पैमाने पर गन्ने की खेती करते है। उक्त केंद्र किसानों को उत्पादित गन्ने को गुड़ कुटीर उद्योग के रूप में विकसित करने में सहायक होगा। कहा कि अकुशल प्रबंधन के कारण चीनी मिलें बंद हो रही हैं। बिहार सरकार इसके प्रति उदासीन बनी रही। जिसके कारण किसानों के गन्ने के खेतों में सुख कर नष्ट हो जाते है। इस दशा में केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित भारतीय गन्ना अनुसंधान केंद्र की उक्त इकाई किसानों के लिए मिल का पत्थर साबित होगा। संचालन केविके के कार्यक्रम समन्वयक डा. केके झा ने किया। मौके पर भारतीय गन्ना अनुसंधान केंद्र के निदेशक डा.एडी पाठक, आरएयू के शिक्षा प्रसार निदेशक डा.केएम सिंह, कृषि वैज्ञानिक डा. अरविन्द कुमार सिंह, विधायक प्रमोद कुमार, सचिन्द्र सिंह, श्यामबाबू यादव, बबलू गुप्ता, जिला उपाध्यक्ष कमलेश्वर सिंह, कृष्णनंदन पासवान, रविंद्र सहनी, कामेश्वर चौरसिया, टूना गिरि, दुर्गा सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

स्थापित होगी यूनिट

- भारतीय गन्ना अनुसंधान केन्द्र स्थापित करेगा यूनिट
- गुड़ प्रोसेसिंग यूनिट सह किसान गोष्ठी केन्द्र का शिलान्यास

कृषि विज्ञान केन्द्र पिपरकोठी में समारोह को संबोधित करते केन्द्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह व अन्य।

ऐसे बनता है गन्ने से गुड़: भारतीय गन्ना अनुसंधान केंद्र लखनऊ के निदेशक डा. एडी पाठक ने गुड़ बनाने के तरीके बताते हुए कहा कि गन्ने से गुड़ बनाने के लिए सबसे पहले गन्ना उगाया जाता है। जिसे तैयार होने में 8 से 9 महीने लगते हैं। गन्ने की फसल तैयार होने के बाद उसे काटकर साफ कर लिया जाता है। फिर गन्ने का रस निकालकर ड्रम में भर लिया जाता है। कढ़ाई रखने के बाद आग जलाकर रस को उबालते हैं। रस को तीन बार फिल्टर करके मैल निकाला जाता है। गुड़ अच्छी तरह पकने के बाद उसे लड्डू के आकार का बनाकर सुखा लेते हैं।

गुड़ पौष्टिकता से होता है भरपूर: वैज्ञानिकों के अनुसार गुड़ पौष्टिकता से भरपूर होता है। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान संस्था के एक विश्लेषण के अनुसार गुड़ के प्रति 100 ग्राम भाग में 3.9 ग्राम नमी, 15 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 0.4 ग्राम प्रोटीन, 0.1 ग्राम वसा, 0.08 ग्राम कैल्सियम, 11.4 मिग्रा लौह तत्व, 386 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। इसके अलावा केरोटीन, निकोटिनिक अम्ल, रिबोफ्लेबिन, विटामिन बी व विटामिन सी भी पाए जाते हैं।

रोग निवारक होता है गुड़: गुड़ की की रोग निरोधक बताते हुए डा. अरविन्द कुमार सिंह ने बताया कि गन्ने के रस से विभिन्न पदार्थ तैयार किए जाते हैं। शक्कर, मिश्री, चीनी आदि शामिल हैं। राब कफकत्रा और वीर्य बढ़ाने वाली है। यह वात, पित्त, मूत्रविकार आदि का निवारण करती है।

चंपारण के युवाओं को आर्थिक रूप से बनाया जाएगा समृद्ध

सभा को संबोधित करते केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह जागरण

- कृषि मंत्री ने किया गुड़ प्रसंस्करण प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन

पीपराकोठी, संस : केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह ने कहा कि चंपारण के युवाओं को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया जाएगा। जब वे समृद्ध होंगे तो उन्हें सूबे के बाहर भटकने की नौबत नहीं आएगी। श्री सिंह पिपराकोठी में गुड़ प्रसंस्करण प्रशिक्षण केंद्र के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। बिहार में लगभग 200 कृषि पदाधिकारी कार्यरत हैं, फिर भी किसानों का विकास नहीं हो पाता है। वहीं भारत सरकार के अंतर्गत रेल, पेट्रोलियम, टेलिकॉम व देश की सुरक्षा आदि मुख्य विभाग आते हैं, उनका विकास तेजी से हो रहा है। केंद्र सरकार राज्यों को विकास के लिए पैसे देती है, परंतु चीनी मिल नहीं चालू करा सकती। यह कार्य राज्य सरकार के अधीन है। पीपराकोठी में कौशल विकास योजना के तहत 100 किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा। उन्हें यात्रा व अन्य भत्ता दिया जाएगा। किसानों का चुनाव कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा किया जाएगा। इस क्षेत्र में किसी की सिफारिश नहीं चलेगी। यहां वैसे किसानों को प्रशिक्षण दिया जाएगा जो कुशल होंगे। प्रशिक्षित किसानों को इकाई लगाने के लिए राशि उपलब्ध कराई जाएगी। पीपराकोठी की 45 एकड़ की भूमि पर कौशल विकास से जुड़ी योजनाओं में गुड़ उत्पादन, मछली पालन, मधुपालन, उन्नत किस्म के बांस उत्पादन के गुर सिखाए जाएंगे। यहां किसानों को सशक्त होने के तरीके बताए जाएंगे।